नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

तीसरी भाषा ; सुप्रीम कोर्ट की चिंता का संज्ञान लें

शिक्षा का उद्देश्य बच्चों पर विषयों का बोझ बढ़ाना नहीं, बल्कि उनकी बौद्धिक क्षमता, अभिव्यक्ति और व्यक्तित्व का समग्र विकास करना है. इसी दृष्टि से सुप्रीम कोर्ट द्वारा नौवीं कक्षा में तीसरी भाषा लागू करने को लेकर व्यक्त की गई चिंता महत्वपूर्ण है. न्यायालय ने कहा है कि तीसरी भाषा की शुरुआत छठी कक्षा से होनी चाहिए और नौवीं तक इसे समाप्त कर देना चाहिए, क्योंकि नौवीं से विद्यार्थियों पर बोर्ड परीक्षाओं की तैयारी का दबाव बढ़ने लगता है. यह टिप्पणी केवल एक न्यायिक राय नहीं, बल्कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की वास्तविकताओं की ओर संकेत भी है.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति बहुभाषिकता को बढ़ावा देने पर बल देती है. इसमें कोई संदेह नहीं कि एक से अधिक भाषाओं का ज्ञान बच्चों के बौद्धिक विकास, संचार कौशल और सांस्कृतिक समझ को समृद्ध बनाता है. भारत जैसे बहुभाषी देश में विभिन्न भाषाओं का अध्ययन राष्ट्रीय एकता और विविधता दोनों को मजबूत करता है. इसलिए तीसरी भाषा का विचार अपने आप में गलत नहीं है. प्रश्न केवल इतना है कि इसे किस आयु और किस कक्षा में पढ़ाया जाए.

बाल मनोविज्ञान बताता है कि प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के शुरुआती वर्षों में बच्चे नई भाषाएं अपेक्षाकृत सहजता से सीखते हैं. छठी कक्षा तक उनकी सीखने की क्षमता अधिक लचीली होती है और वे भाषा को बोझ के बजाय स्वाभाविक रूप से ग्रहण कर लेते हैं. इसके विपरीत नौवीं कक्षा में विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान और अन्य विषयों की जटिलता बढ़ जाती है. इसी समय विद्यार्थियों में भविष्य की परीक्षाओं और करियर को लेकर चिंता भी बढ़ने लगती है. ऐसे में एक नई भाषा जोड़ना कई छात्रों के लिए अतिरिक्त मानसिक दबाव का कारण बन सकता है. हालांकि, यह भी ध्यान रखना होगा कि भाषा नीति पर अंतिम निर्णय व्यापक शैक्षिक और प्रशासनिक तैयारी के आधार पर ही होना चाहिए. यदि सरकार बहुभाषिक शिक्षा को प्रभावी बनाना चाहती है तो सबसे पहले पर्याप्त प्रशिक्षित शिक्षक, गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकें, डिजिटल संसाधन और स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप पाठ्यक्रम उपलब्ध कराने होंगे. केवल नीति घोषित कर देना पर्याप्त नहीं होता. बिना तैयारी के लागू की गई कोई भी व्यवस्था विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों के लिए कठिनाइयां पैदा करती है.

तमिलनाडु में तीन-भाषा नीति और जवाहर नवोदय विद्यालयों को लेकर चल रहा विवाद यह भी दिखाता है कि शिक्षा का विषय अक्सर राजनीतिक बहस का हिस्सा बन जाता है. जबकि शिक्षा नीति का मूल्यांकन राजनीतिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के हित और सीखने की गुणवत्ता के आधार पर होना चाहिए. भाषा किसी क्षेत्र की पहचान और संस्कृति का विषय अवश्य है, लेकिन उसका उद्देश्य बच्चों के अवसरों का विस्तार करना होना चाहिए, उन्हें अनावश्यक विवादों में उलझाना नहीं.

सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणियां सरकार और शिक्षा नीति निर्माताओं के लिए एक उपयोगी संकेत हैं. यदि तीसरी भाषा को प्रारंभिक स्तर पर प्रभावी ढंग से पढ़ाया जाए और उच्च कक्षाओं में विद्यार्थियों को मुख्य विषयों पर अधिक ध्यान देने का अवसर मिले, तो शिक्षा अधिक संतुलित और परिणामकारी बन सकती है. अंततः किसी भी शिक्षा व्यवस्था की सफलता इसी में है कि वह बच्चों की जिज्ञासा को प्रोत्साहित करे, उनका आत्मविश्वास बढ़ाए और सीखने को तनाव नहीं, आनंद का माध्यम बनाए.

ब्रिक्स देशों में पोषण संवर्धन के लिए खाद्य भंडार

डॉ. स्वाति नायक

> भविष्य के खाद्य भंडार की सफलता केवल उनके भंडारण सुविधा में रखे अनाज की मात्रा पर निर्भर नहीं करेगी. इसके बजाय, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि वे संकट के समय समाज को स्थिर रखने में कितनी मदद कर सकते हैं, गरीब लोगों के लिए अच्छे पोषण के परिणाम कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं, क्षेत्रीय खाद्य उत्पादन प्रणाली को कैसे मजबूतकर सकते हैंऔर कमजोर वैश्विक खाद्य आपूर्ति श्रृंखलाओं पर निर्भरता को किस प्रकार कम कर सकते हैं. इसलिए, ब्रिक्स देशों के लिए खाद्य भंडार का सवाल यह नहीं होना चाहिए कि अधिक भोजन कैसे पैदा करें, बल्कि यह होना चाहिए कि स्मार्ट, पोषण-केंद्रित भंडार कैसे बनाए जाएं.

जलवायु से जुड़ी चुनौतियों और आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान अक्सर वैश्विक खाद्य अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते हैं, जिससे ब्रिक्स समूह को नई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है. खाद्य भंडारों, जिन्हें अक्सर आपातकालीन स्टॉक के रूप में देखा जाता है, कोअब पोषण सुदृढ़ता, स्थिरता और तेज़ी से बदलती बाजार और सामाजिक प्रणालियों के हिसाब से नए सिरे से व्यवस्थित करने की ज़रूरत है.

हालांकि वैश्विक खाद्य सुरक्षा के लिए रणनीतिकभंडार बनाए रखना महत्वपूर्ण है, लेकिन अभी सवाल यह है कि जलवायु और व्यापार की अनिश्चितताओं के साथ-साथ भूख और कुपोषण की लगातार मौजूद समस्याओं के जवाब में किस तरह के भंडार निर्मित किये जाने चाहिए. विश्व बैंक: एफएओङ्कडब्ल्यूएफपी रिपोर्ट (2025) - खाद्य सुरक्षा बढ़ाने के लिए रणनीतिक अनाज भंडार को मजबूत करना - में बताया गया है कि 2024 में 74 देशों में 343 मिलियन लोग गंभीर खाद्य असुरक्षा का सामना कर रहे थे. यह संख्या कोविड-19 महामारी से पहले के सालों में खाद्य असुरक्षा का सामना करने वाले लोगों की संख्या से लगभग दोगुनी है. बहु-स्तरीय आर्थिक उथल-पुथल से व्यापार में व्यवधान हुए हैं और भूख में वृद्धि हुई है, इन सभी ने खाद्य सुरक्षा के लिए नए चुनौतियां खड़ी कर दी हैं.

2026 में हालात और भी खराब हो गए. विश्व बैंक के अनुसार, पश्चिम एशिया में चल रहे युद्ध के कारण होर्मुज जलडमरूमध्य के जरिए तेल और उर्वरक का परिवहन प्रभावित हुआ है, जो वैश्विक कृषि-खाद्य मूल्य श्रृंखलाओं की एक महत्वपूर्ण कड़ी है. फरवरी से मार्च 2026 के बीच उर्वरकों की कीमतों में तेज बढ़ोतरी हुई, जिसमें यूरिया की कीमत एक ही महीने में लगभग 46 प्रतिशत बढ़ गई. विश्व खाद्य कार्यक्रम के पूर्वानुमानों के अनुसार, लगातार व्यवधान के कारण 45 मिलियन तक लोग भुखमरी की स्थिति में पहुंच सकते हैं.

यह ब्रिक्सदेशों के लिए एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि इनमें से अधिकांश देश प्रमुख कृषि उत्पादक/आयातक और उर्वरक के उपभोक्ता दोनों हैं.

हालाँकि, खाद्य भंडारों के बारे में पारंपरिक सोच अब पुरानी पड़ती जा रही है. पारंपरिक रूप से, खाद्य भंडार बनाने का उद्देश्य मुख्य रूप से कीमतों को स्थिर रखना या अस्थायी कमी से निपटना था. दूसरी ओर, आधुनिक समस्या अधिक जटिल है और इसके लिए ऐसे उपायों की जरूरत है जो न सिर्फ पर्याप्त कैलोरी की गारंटी दें, बल्कि खाद्य के पोषण संतुलित होने, किफायती होने और व्यवधानों के बीच लगातार उपलब्ध होने की भी गारंटी दें. यूरोपीय आयोग की संश्लेषण रिपोर्ट - विकासशील देशों में खाद्य और पोषण सुरक्षा बढ़ाने के लिए खाद्य भंडार का उपयोग - के अनुसार, खाद्य और पोषण सुरक्षा; अनाज की भौतिक उपलब्धता से कहीं अधिक है.

ब्रिक्स देशों के संदर्भ में यह परिवर्तन और भी महत्वपूर्ण बन गया है, जहाँ भरपूर खाद्य संसाधन होने के बावजूद भी खाद्य संकट बरकरार है. उदाहरण के तौर पर, भारत ने 2024 से 2025 की अवधि में रिकॉर्ड 353.96 मिलियन टन अनाज का उत्पादन किया है, साथ ही दुनिया के सबसे बड़े खाद्य नेटवर्क में से एक को बनाए रखा है. भारत सरकार के पत्र सूचना कार्यालय द्वारा फसल से घर तक- अनाज भंडारण के लिए सुदृढ़ अवसंरचना का निर्माण विषय पर 2025 में जारी एक पृष्ठभूमि विज्ञप्ति में इस तथ्य का उल्लेख किया गया था.

भारत में उभरती हुई भंडार प्रणालियाँ यह दिखाती हैं कि भंडार केवल जमा किए गए अनाज से कहीं ज़्यादा सक्रिय पोषण प्रबंधन की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं. वैज्ञानिक भंडारण, डिजिटलीकरण, विकेंद्रीकरण और सार्वजनिक वितरण प्रणाली से जु?ाव की प्रक्रिया प्रमुख अनाज - चावल और गेहूं - के साथ-साथ दालों, मोटे अनाजों और पोषण वर्धित खाद्य पदार्थों की जैविकपोषण वर्धित किस्मों को शामिल करके भंडार में विविधता लाने का मौका देती है. यह और भी जरूरी हो जाता है, क्योंकि भारत दुनिया के पोषण परिदृश्य में फसल विविधीकरण को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रहा है.

(लेखिका सीड सिस्टम्स और प्रोडक्ट मैनेजमेंट की दक्षिण एशिया प्रमुख तथा इंडिया कंट्री मैनेजर (अंतरिम) हैं)

मध्य क्षेत्र की डायरी

एशियन गेम्स 2026

चयन मापदंडों की अनदेखी, प्रतिभावान खिलाड़ी के साथ हो रहा अन्याय

दिलीप झा

अजब-गजब मध्यप्रदेश मेरा आदमी तेरा आदमी के पक्षपात रवैये से उबर नहीं पा रहा है. हर क्षेत्र में पक्षपात से प्रदेश के लोग और युवाओं में आक्रोश है. स्कूल-कॉलेजों से जो सूचनाएं आ रही हैं, वह हैरान करने वाली हैं. इन दिनों लगातार एनएसयूआई और एबीवीपी के नेतृत्व में धरना प्रदर्शन कर रहे हैं लेकिन शिक्षा विभाग की नींद नहीं खुली रही है जबकि वे नित्य समस्याओं से जूझ रहे हैं. प्रदेश में सभी खेल क्षेत्रों में बुरा हाल है. खिलाड़ियों को उचित सुविधाएं नहीं मिल रही हैं. खिलाड़ियों के चयन में धांधली हो रही है. खिलाड़ियों के अभिभावक निराश हैं. प्रदेश की होनहार और प्रदेश की पहली महिला घुड़सवार सुदीप्ति, जो राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय घुड़सवार खिलाड़ी हैं एवं 2023 के एशियन गेम्स की ऐतिहासिक स्वर्ण पदक विजेता टीम की सदस्य हैं, वे 2026 में जापान में होने वाले एशियन गेम्स के लिये यूरोप में लगातार 3 वर्षों से घुड़सवारी का प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं. भारतीय घुड़सवारी महासंघ द्वारा जारी चयन नियम के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में ट्रायल खेलकर आवश्यक क्वालिफिकेशन प्राप्त किये और अंतर्राष्ट्रीय घुड़सवारी महासंघ द्वारा आयोजित इन क्यालिफाइंग ट्रायल्स के मार्क भारतीय घुड़सवारी महासंघ के नियमानुसार प्रेषित किये .

भारतीय घुड़सवारी महासंघ ने प्रकाशित चयन नियम 17 अप्रैल 2020 के क्लाउज 8 (एफ) और 13 (जी) को नजरअंदाज करते हुए गोपनीय तरीके से रैंकिंग फार्मूला तैयार कर सुदीप्ति को रिजर्व 2 कैटेगरी में नान-प्लेइंग एथलीट में डाल दिया है जबकि चयन प्रक्रिया और एशियन गेम्स 2020 के फॉर्मेट के अनुसार एशियन गेम्स में घुड़सवारी के दो प्रभाग अलग-अलग होते हैं. पहला टीम गेम और दूसरा व्यक्तिगत गेम. सुदीप्ति ने टीम गेम के लिये चयन प्रक्रिया अनुसार एशियन गेम्स की निर्धारित योग्यता एवं एमईआर (मिनिमम एलिजीबिलिटी रिक्वायरमेंट) अंक प्राप्त किये हैं और उक्तानुसार सुदीप्ति दूसरे क्रम पर वरीयता सूची में आती हैं. चयन प्रक्रिया के अनुसार व्यक्तिगत क्वालिफाइंग अंक प्राप्त घुड़सवारों को वरीयता देने के बाद भी सुदीप्ति ने टीम में चौथे स्थान पर अंक तालिका में अपनी जगह बनाई है परंतु भारतीय घुड़सवारी महासंघ ने प्रकाशित चयन प्रक्रिया के नियमों से परे जाकर छठवें स्थान वाले घुड़सवार, जिसके

पास व्यक्तिगत अंक नहीं हैं और चयन प्रक्रिया के अनुसार सुदीप्ति से टीम गेम में बेस्ट 2 एमईआर अंकों से कम होने के बाद भी चौथे स्थान पर गोपनीय तरीके से नया फार्मूला बनाकर वरीयता सूची में बदलाव कर सुदीप्ति को सूची में छठवे स्थान रिजर्व 2 पर कर दिया गया.

संपूर्ण अर्हताएं होने के बाद भी भारतीय घुड़सवारी महासंघ ने मेरिट सूची बदलकर नये अघोषित एवं अप्रकाशित गणना सूत्र, जो कहीं भी उल्लेखित नहीं है, उनके अनुसार छठवें स्थान के खिलाड़ी को चौथे स्थान पर लेकर सुदीप्ति के साथ भेदभाव पूर्ण रवैया अपनाया गया है. सुदीप्ति ने इस संबंध में एडहॉक कमेटी की अध्यक्ष यशोधरा राजे सिंधिया, इंडियन ओलम्पिक एसोसिएशन और भारत खेल मंत्रालय से अपील की है कि प्रकाशित चयन प्रक्रिया अनुसार ही वरीयता सूची बनाई जाये और अप्रकाशित एवं अघोषित नये चयन प्रक्रिया के अनुसार गणना नहीं की जायें क्योंकि भारत का प्रतिनिधित्व करना हर खिलाड़ी का एक सपना होता है, जिसके लिये वर्षों की तपस्या, मेहनत और प्रशिक्षण अपने घर परिवार को त्याग कर एक समर्पित जीवन जीना होता है. उसके बाद यदि अर्हताएँ प्राप्त करने के बाद भेदभाव के चलते निर्धारित मापदंड होने के बाद भी अन्तिम सूची में जगह न मिलना अत्यधिक मायूस कर रहा है.

मध्यप्रदेश सरकार के खेल मंत्रालय, भारत सरकार के खेल मंत्रालय, इंडियन ओलम्पिक एसोसिएशन सभी को ये सोचना चाहिए कि भारतीय घुड़सवारी महासंघ को प्रकाशित चयन प्रक्रिया में दिये गये मैरिट चयन के नियमानुसार ही भारतीय टीम में निर्धारित मापदंडों की रैंकिंग के अनुसार ही नाम अग्रेषित हों, लेकिन विडंबना है कि ऐसा होता नहीं है. इससे स्पष्ट है कि खेल प्रतिभाओं के साथ वर्षों से भेदभाव हो रहा है.

मन से दो चंदा, नहीं तो हो जाएगा चोरी !

उत्तरप्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष सतीश महाना के महान चिंतन की दाद देनी होगी! उन्होंने अयोध्या के राम मंदिर की चंदा चोरी का रहस्य अपने तरीके से उजागर करते हुए कहा कि लोगों ने बेमन से चंदा दिया, इसलिए वह चोरी हुआ. शायद महाना के दिमाग में हिंदी की कहावत रही होगी सूम का धन चांडाल खाए, पापी हाथ मलता रह जाए ! उनका आशय है कि किसी ने मन न होते हुए भी लोकलाज की वजह से या देखादेखी चंदा दिया होगा, तो उस अश्रद्धालु का दान प्रभु ने स्वीकार नहीं किया और वह चढ़ावा भगवान की बजाय चोरों के पास चला गया. सतीश महाना ने कहा कि हमारा पैसा तो चोरी नहीं हुआ. वह मंदिर निर्माण में लगा. मंदिर की भव्यता इसका प्रमाण है. उनका तर्क है कि जब एक बार किसी ने दान कर दिया तो फिर उसकी चिंता क्यों? दान देने के बाद कोई पैसा मांगता है क्या? दान का मतलब ही होता है- नेकी कर, दरिया में डाल ! दान देने के बाद उसे भूल जाओ. दाहिने हाथ ने क्या दिया, इसका पता बाएं हाथ को भी नहीं चलना चाहिए ! दान गुप्त रहे और उसकी चोरी भी गुप्त रूप से होती रहे ! बंधी मुट्ठी लाख की, खुली तो प्यारे खाक की ! चंदा या चढ़ावा देने वाले व्यक्ति को निर्मोही रहना चाहिए. 'तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा' की भावना रखकर दान-चंदा दिया जाए. यह देश राजा बलि और कर्ण जैसे महादानी का है, जिन्होंने दान देते समय परिणाम की बिल्कुल चिंता नहीं की. बलि को शुक्राचार्य ने सतर्क किया था कि वामन के रूप में विष्णु तुमसे छल करने आए हैं लेकिन बलि के दान के संकल्प का कोई विकल्प नहीं था. कर्ण को भी अनुमान लग गया था कि उसका कवच-कुंडल मांगने वाला याचक वास्तव में देवराज इंद्र है लेकिन वह फिर भी दान से पीछे नहीं हटा. इसलिए हमारी संस्कृति कहती है कि पूरे मन और निस्वार्थ भाव से दान-चंदा देते रहो. उसे कोई चुराए या खा-पी जाए, उस बारे में मत सोचो. उसकी करनी उसके साथ! जो धन कल तुम्हारा था, आज वह किसी और का है, परसों किसी और के पास चला जाएगा. यही काल की गति है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

न्यायपालिका लोकतंत्र का पिलर जज निकला एलपीजी डीलर

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, आप राजनेताओं के भ्रष्टाचार की जितनी चाहे आलोचना कर सकते हैं लेकिन जजों की ओर उंगली नहीं उठा सकते. इसीलिए कुछ जजों का भ्रष्टाचार कार्पेट के नीचे जमी धूल के समान छिप जाता है.' हमने कहा, 'न्यायपालिका का उचित व पूर्ण सम्मान करते हुए हम कहेंगे कि कुछ न्यायाधीशों का आचरण सही नहीं होता. वह कानून के रखवाले न होकर उसके साथ खिलवाड़ करते हैं. खबर है कि दिल्ली हाईकोर्ट के एक जज ने जो बाद में मणिपुर हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस बने, पद पर रहते हुए व्यवसाय किया और न्यायिक सेवा नियमों की मट्टीपलीद कर दी.'

पड़ोसी कहा, ने 'निशानेबाज, हम आपको फिर चेतावनी दे रहे हैं कि जजमेंट करना जज का काम है. आप किसी जज के कार्यकलाप के बारे में कोई जजमेंट मत लीजिए. उस ओर झांकिए भी मत ! कुछ चीजों की अनदेखी करने में ही समझदारी है. आपने अंग्रेजी कहावतें सुनी होंगी किंग कैन डू नो रॉन्ग अर्थात राजा कोई गलती नहीं कर सकता. सीजर्स वाइफ इज अबाउ ससपीशियन मतलब सम्राट सीजर की पत्नी संदेह से परे है.'

हमने कहा, 'आपने शेर सुना होगा- हकीकत छुप नहीं सकती कभी झूठे उसूलों से, खुशबू आ नहीं सकती कागज के फूलों से ! कोई इन फूलों पर परफ्यूम छिड़क दे तो अलग बात है. मार्च 2025 में दिल्ली हाईकोर्ट के जज यशवंत वर्मा के बंगले में आग लगी थी, जहां आग बुझा रहे दमकल कर्मियों को अधजले नोटों के बंडल मिले. जज ने सफाई दी थी कि मेरी गैरहाजिरी में कई लोग मेरे घर आते-जाते हैं. मुझे क्या पता, कोई नोटों का बंडल रखकर चला गया होगा. अब समाचार है कि मणिपुर के रिटायर्ड चीफ जस्टिस सिद्धार्थ मृदुल जज के रूप में अपने 16 वर्ष के पूरे कार्यकाल में रसोई गैस एजेंसी चला रहे थे. उनकी कंपनी का नाम किचनफ्लेम था. उन्होंने 1984 में एलपीजी एजेंसी ली. फिर 2 वर्ष बाद वकालत शुरू की. 2008 में दिल्ली हाईकोर्ट के जज बने. 2023 में मणिपुर हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस बने लेकिन अपनी गैस एजेंसी कायम रखी. न्यायदान के साथ गृहिणियों को रसोई गैस प्रदान करते रहे. 2025 में उन्होंने फिर अपनी डीलरशिप का 5 वर्ष के लिए नवीनीकरण कर लिया.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, यह मत भूलिए कि समाज में अच्छे-बुरे, ईमानदार-बेईमान हर प्रकार के लोग होते हैं. जज भी इसी समाज से आते हैं. कभी-कभी बासमती चावल में भी कंकर निकल आता है. क्या पतितपावनी गंगा में प्रदूषण नहीं रहता ? इतना जरूर है कि खुद की एजेंसी होने से उस जज के घर में कभी गैस की कमी हो ही नहीं सकती.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12322 - डॉ. सागर खादीवाला

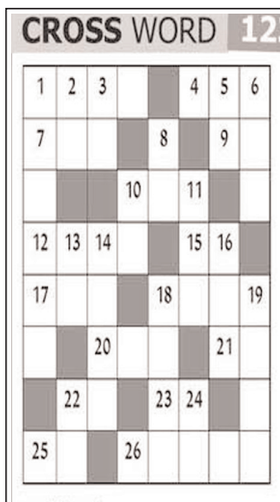

श्रवणेंद्रिय, कर्ण 25. वस्त्र, चीरने का काम या भाव 26. चरमर शब्द होना या करना

ऊपर से नीचे

1. घाव का इलाज करना, मरहम-पट्टी बांधना 2. बाजार, दूकान 3. एक आंख का, एकाक्ष 5. लज्जा, शर्म (उर्दू) 6. भूमि, धरती (उर्दू) 8. गुनाह 10. बोध, जानना 11. मुलायम, जो कठोर न हो 13. पराजय, माला 14. भीड़, जमावड़ा 16. बासी भोजन, बासी 18. कलापूर्ण कार्य करने वाला, आर्टिस्ट 19. नम्र होना, शांत करना, नरम या मुलायम होना या करना 22. मकान, आवास 24. सीला, आर्द्र (उर्दू)

बाएं से दाएं

1. महादेव, शिव के एक गण का नाम, समय जो अनंत और अखंड है (सं.) 4. सिर्फ, केवल, खालिस 7. कोई भी बात या शब्द बार-बार कहना, कंठस्थ करने के लिए बार-बार पढ़ना 9. रात, कुलवधु (सं.) 10. जताने या बताने का काम, मेमोरेंडम 12. धनी व्यक्ति, रुपये के लेन-देन का व्यवहार करने वाला 15. ईश्वर, परमेश्वर 17. जिससे आगे या अधिक और कुछ न हो, सर्वश्रेष्ठ 18. अल्पवयस्क, कम उम्र (उर्दू) 20. गोलमाल, गड़बड़ 21. मित्र, प्रेमी (उर्दू) 22. घड़ा, शरीर (सं.) 23.

Solution 12321

अ	वा	म	■	क	र	म	■
म	ह	ल	■	म	स	ह	री
र	■	खा	ति	र	दा	री	■
बे	हु	न	र	■	र	■	आ
ल	■	■	पा	ना	■	■	मि
■	सु	नी	ल	गा	व	स्क	र
द	ख	ल	■	श	र	■	खा
र्द	■	म	स	न	द	■	न

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में दाम्पत्य जीवन में वाद विवाद होगा. अधिकारी के कोप कासामना करना होगा. व्यापार में अनिश्चितता की स्थिति रहेगी. वर्ष के मध्य में बैचारिक मंथन होगा. धार्मिक कार्यो में रूचि रहेगी. वर्ष के अन्त में आर्थिक योजनाओं में लाभ होगा. साहसिक कार्यो में वृद्धि होगी, मनोबल बढेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को दाम्पत्य जीवन में वाद विवाद होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को अधिकारियों के कोप का सामना करना होगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को बैचारिक मंथन होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को व्यापार में स्थिति सामान्य रहेगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को साहसिक क्षमता में वृद्धि होगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को धार्मिक कार्यो में रूचि रहेगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को आर्थिक योजनाओं में लाभ होगा. मनोबल बढ़ा रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर सुशील मिलनसार और न्यायप्रिय होगा, भूमि भवन मकान आदि का सुख रहेगा. नौकरी आदि में सफलता मिलेगी. माता का भक्त होगा. जन्म स्थान से दूर भाग्योदय होगा.

मेष- कामकाज निपटाने के लिये किसी के सहयोग की जरूरत होगी. लाभ होने का योग है. यात्रा आदि का योग प्रबल रहेगा. प्रयत्नों में सफलता मिलेगी.

वृषभ- दूसरों को अपने व्यक्तिगत मामलों में दखल का अवसर न दें. परिश्रम की अधिकता बनी रहेगी. सुखद अनुभवों की प्राप्ति होगी.

मिथुन- भौतिक सुख सुविधा में बढ़ोत्तरी संभव है. कार्य क्षेत्र में आपका प्रभाव व वर्चस्व बढ़ेगा. स्त्री जाति की सलाह उपयोगी सिद्ध होगी. आर्थिक कार्यो में सुधार होगा.

कर्क- कुछ लोग आपसे नजदीकी का लाभ उठाने की कोशिश कर सकते हैं. व्यवसायिक क्षेत्र में सुधार होगा. अतिथि वृषभमन का योग है. संयम से कार्य करें.

सिंह- रूकी योजनाओं में गति देने में सफलता मिलेगी. पारिवारिक परेशानी दूर होगी. हितकारी लाभदायक योजनायें बनेंगी. उत्साह बना रहेगा.

कन्या- कैरियर में आ रही बाधा दूरी होंगी. कम लाभ में भी संतोष रहेगा. उचित मार्गदर्शन मिलेंगे. यश प्राप्त होगा. मित्र आपकी मदद करेंगे.

तुला- स्वास्थ्य में उतार चढाव बना रहने से सेहत बिगड़ सकती है. मामूली बात पर मित्रों से कहासुनी होगी. मानसिक प्रसन्नता होगी.

वृश्चिक- आपके सहज स्वाभाव का लोग गलत फायदा उठाने का प्रयास कर सकते हैं. निकट संबंधियों का सहयोग रहेगा.मनचाही सफलता मिलेगी. कामकाज पूरा होगा.

धनु- आपका कड़ा व्यवहार घर में कलह का कारण बन सकता है. विद्या पक्ष में उन्नति होगी. कामकाजी महिलाओं को अच्छी सफलता का योग है.

मकर- आकस्मिक विस्तार की संभावना को बल मिलेगा. कोर्ट कचहरी के कार्यो में यथेष्ठ सफलता मिलेगी. कार्य की अधिकता रहेगी.

कुम्भ- आप किसी बात को लेकर भयभीत हो सकते हैं. मित्रों का साथ आगे बढ़ने की हिम्मत देगा. परिश्रम अधिक रहेगा. किसी विशिष्ट व्यक्ति से सहयोग मिलेगा.

मीन- मित्रों से किया गया वादा निभाना मुश्किल होगा, नए काम की तलाश में सफलता मिलेगी. कामकाज के प्रति उत्साह बना रहेगा. व्ययभार की अधिकता रहेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

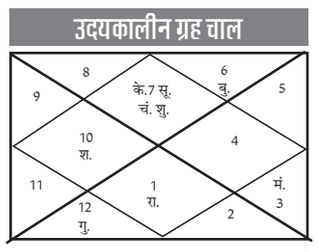

पंचांग

रा.मि. 27 संवत् 2083 आषाढ शुक्ल चतुर्थी शनिवासरे दिन 8/18, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रे रात 10/22, वरीयान योगे रात 1/42, विष्टि करणे सू.उ. 5/18, सू.अ. 6/42, चन्द्रचार सिंह रातअंत 4/24 से कन्या, शु.रा. 5, 7, 8, 11, 12, 3 अ.रा. 6, 9, 10, 1, 2, 4 शुभांक- 7, 9, 3.

व्यापार भविष्य

आषाढ शुक्ल चतुर्थी को पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, पीपल खांड़ गेहूँ, सूत, जौ, चना, तिल, तेल, में तेजी होगी. वायदा विचार आज शेयर बाजारों के रूख पर व्यापार करना लाभदायक रहेगा. भाग्यांक 2559 है.

SUDOKU 7454

	7	9	4	2		6		3
	6		8		7		2	
4	1				3	5	8	
	9	8	3					
7		4		5		8		1
					9	7	3	
	8	5	7				4	6
	2		9		1		5	
3		1		6	8	9	7	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7453

8	9	5	1	3	7	2	4	6
7	3	2	6	5	4	1	8	9
1	6	4	8	9	2	7	5	3
5	7	3	4	2	9	6	1	8
4	2	8	5	6	1	3	9	7
6	1	9	3	7	8	5	2	4
3	5	1	9	4	6	8	7	2
2	4	6	7	8	5	9	3	1
9	8	7	2	1	3	4	6	5